Read India
An imprint of Pratham Books

बुलबुलों वाला फेनीला दूध

जयश्री देशपांडे
श्रीकृष्णा केडीलाया

RGF Pratham SERIES

Original Story (*Kannada*) Nore Nore Hallu by Jayashree Deshpande
© Rajiv Gandhi Foundation – Pratham Books, 2004

Second Hindi Edition: 2009

Illustrations & Design: Srikrishna Kedilaya
Hindi Translation: K. Vijaya

ISBN : 81-8263-141-6

Registered Office:
PRATHAM BOOKS
633-634, 4th "C" Main, 6th 'B' Cross, OMBR Layout,
Banaswadi, Bangalore 560 043
✆ 080-25429726 / 27 / 28

Regional Offices:
Mumbai ✆ 022-65162526 and New Delhi ✆ 011-65684113

Typesetting and Layout by: Pratham Books, New Delhi

Printed by: Pentaplus Printers Pvt. Ltd., Bangalore

Published by:
Pratham Books | www.prathambooks.org

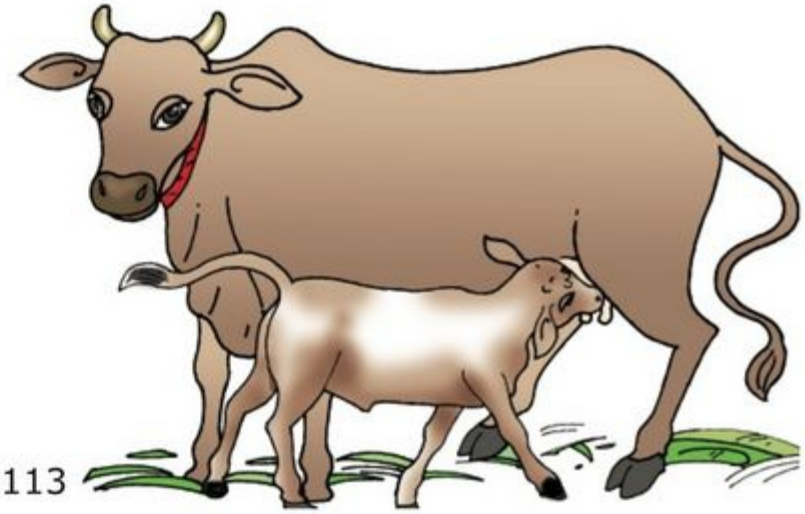

Some rights reserved. This book is CC-BY-3.0 licensed.
Full terms of use and attribution available at:
http://www.prathambooks.org/cc

बुलबुलों वाला फेनीला दूध

लेखन : जयश्री देशपांडे
चित्रांकन : श्रीकृष्णा केडीलाया
हिन्दी अनुवाद : के. विजया

यह पुस्तक

_____

_____

_____

की है।

राजू गर्मी की छुट्टियाँ दादा-दादी के
पास गाँव में बिताने आया था।
वहाँ उसे एक नई बात पता चली।

शहरों की तरह यहाँ दूध पैकेट में नहीं मिलता।
वहाँ गाय का ताज़ा दूध ही मिलता है।

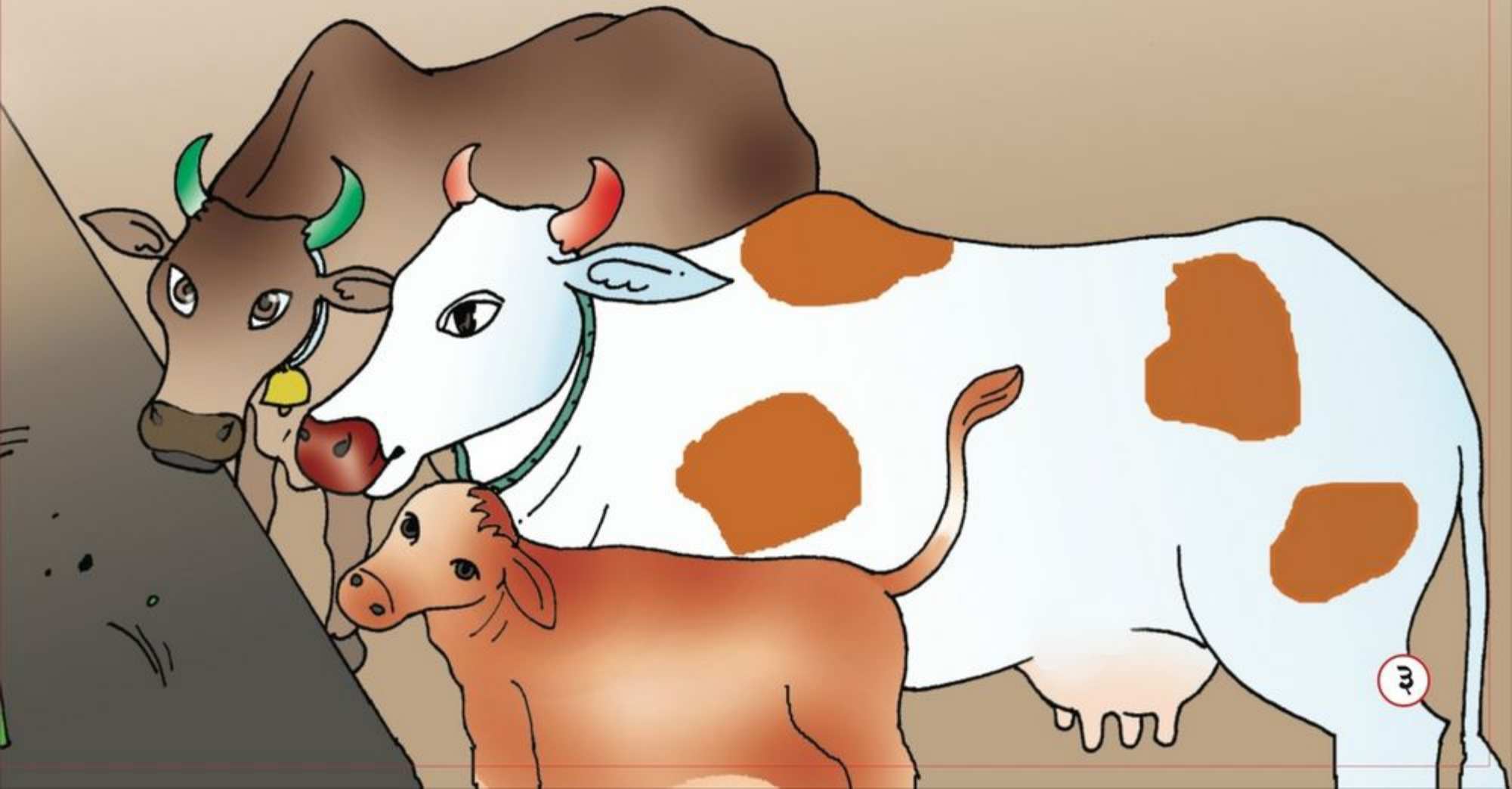

जिस दिन राजू दादा-दादी के यहाँ
पहुँचा, उसी शाम दादी राजू को
अपने घर के पिछवाड़े ले गईं जहाँ
गाय बँधा करती थीं।

वहाँ खड़ी सुन्दर गायों को और
प्यारे-प्यारे बछड़ों को खेलता देख
राजू बड़ा खुश हुआ।

राजू ने दादी से पूछा, ''क्या आपने इन्हीं गायों का दूध मुझे पीने के लिए दिया था?''

दादी ने बताया, ''हाँ राजू! इस बड़ी गाय का नाम कावेरी है। थोड़ी देर पहले मैंने इसी का दूध दुहकर तुम्हें पिलाया था।''

दादी राजू को अपनी बाकी गायों के पास ले गईं, ''देखो यह कपिला है, यह गंगा है और उस ओर जो खड़ी है उसका नाम गौरी है। यह गायें कुछ नहीं करेंगी, इन्हें तुम छूकर भी देख सकते हो।''

सर ऊपर उठाकर बछड़े अम्बा-अम्बा बोल रहे थे। गायें अपने करीब आये बछड़ों को सूँघ कर चाट रही थीं।

राजू ने गौरी गाय की गर्दन को छूकर देखा।
उसे वह मुलायम और ढीली सी महसूस हुई।
जब राजू ने उसे छुआ तो वह अम्बा की
आवाज़ में पुकार उठी।
९

दादी ने पूछा, ''राजू, क्या तुम्हें
पता है कि दूध कहाँ से और
कैसे निकलता है?''

राजू ने कहा, ''नहीं दादी,
हमारे शहर में तो दूध
पैकेट में मिलता है।''

''आओ, मैं तुम्हें दिखाती हूँ,''
कहकर दादी ने गाय के करीब
जाकर पहले बछड़े को गाय का
थन चूस कर दूध पीने दिया।
१२

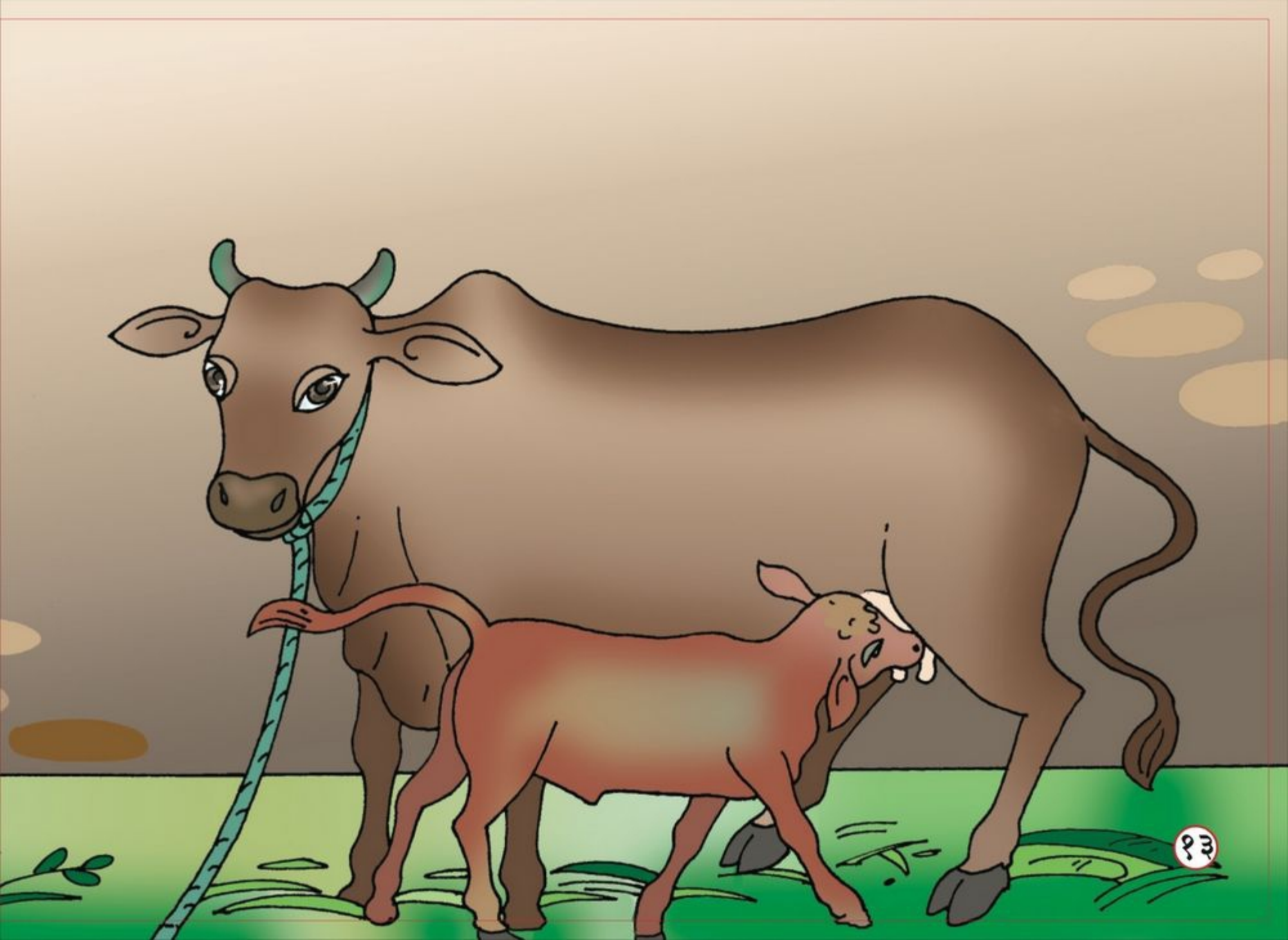

फिर उन्होंने शुद्ध पानी से गाय के थन को साफ़ किया। उसके बाद वह घुटने ज़मीन पर टेक कर बैठीं और जब दोनों हाथ की उँगलियों से गाय के थन को हल्के-हल्के नीचे की ओर दबा कर खींचा तो दूध की धार बह निकली और लोटा भर गया।

इस प्रकार दुहे गये दूध पर
बुलबुलों का फेन बन गया था।
राजू ने खुश होकर कहा,
''ओह, दादी देखो यहाँ दूध पर
किस प्रकार फेन उठ रहा है।''

दादी ने कहा, ''हाँ राजू, जब हम उँगलियों से थन को खींचते हैं तो दूध की धार ज़ोर से उतरती है। तब हवा के कण दूध के कणों के साथ घुल-मिल जाते हैं और इस तरह फेन के बुलबुले बन जाते हैं। इसीलिए ताज़ा दूध इतना स्वादिष्ट होता है।'' राजू ने पूछा, ''सच?''

दादी उसे रसोईघर में ले गईं और कुछ दूध गर्म करके पिलाया। वह तो सच में स्वादिष्ट था।

राजू ने दादी से कहा, ''दादी, मैं शहर वापस जाकर अपने दोस्तों को बुलबुले वाले, फेनीले दूध के बारे में बताऊँगा। उन्हें तो यह सब मालूम नहीं है।''

दादी हँसीं और बोलीं, ''हाँ, ज़रूर।
सब तुम्हारी अक्ल की दाद देंगे।''

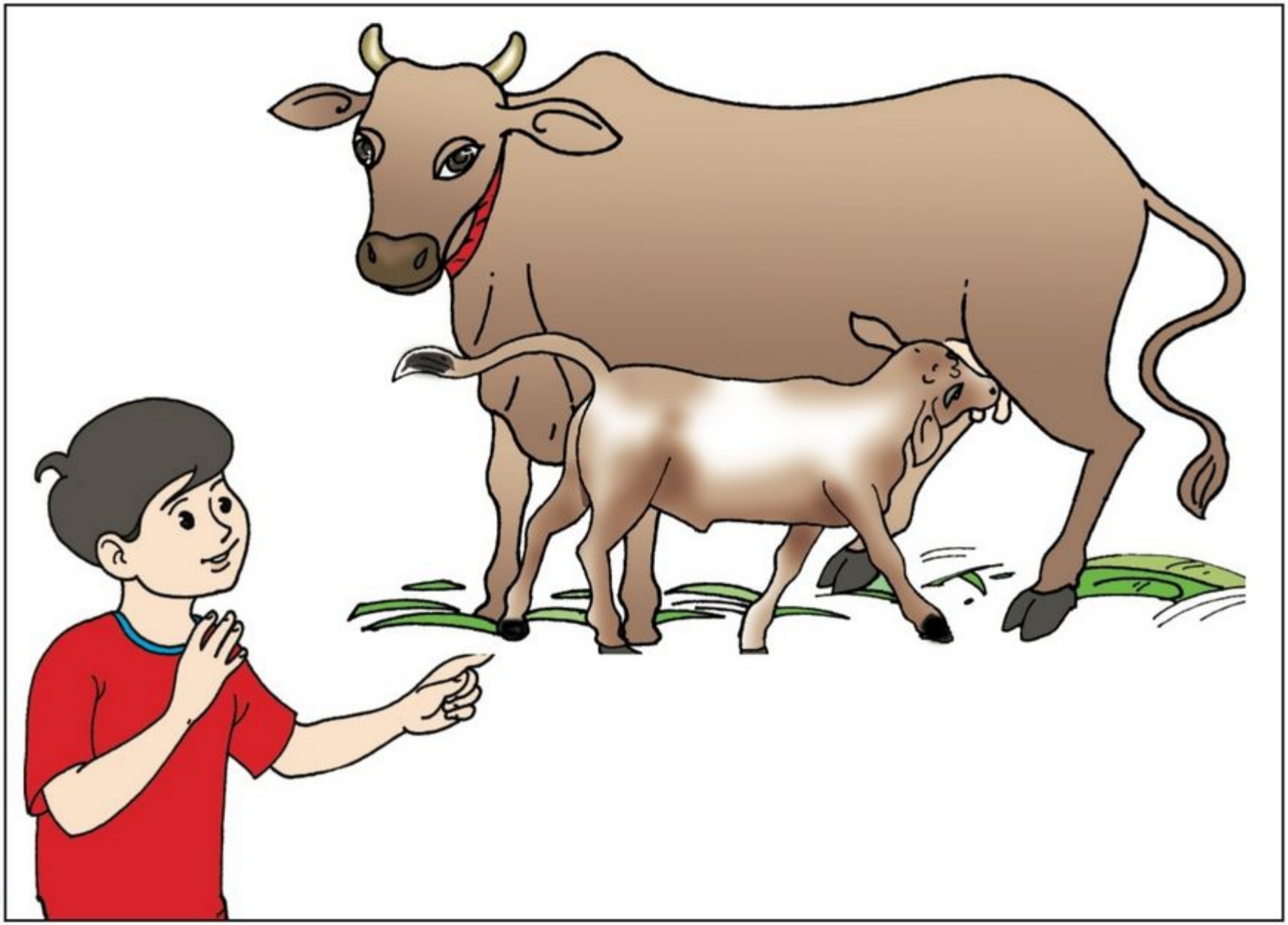

इस चित्र में रंग भरो।

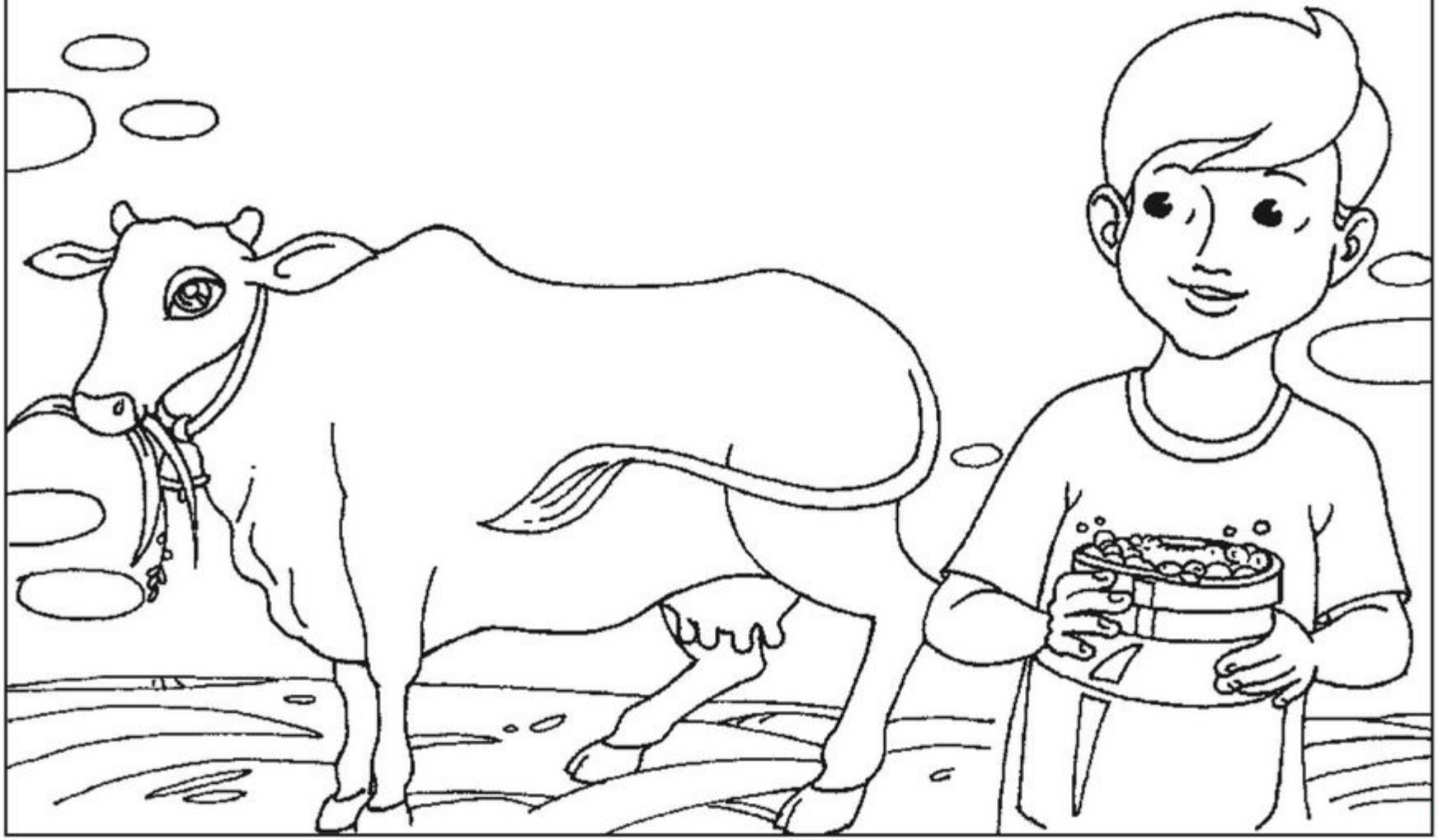

इस चित्र में रंग भरो।

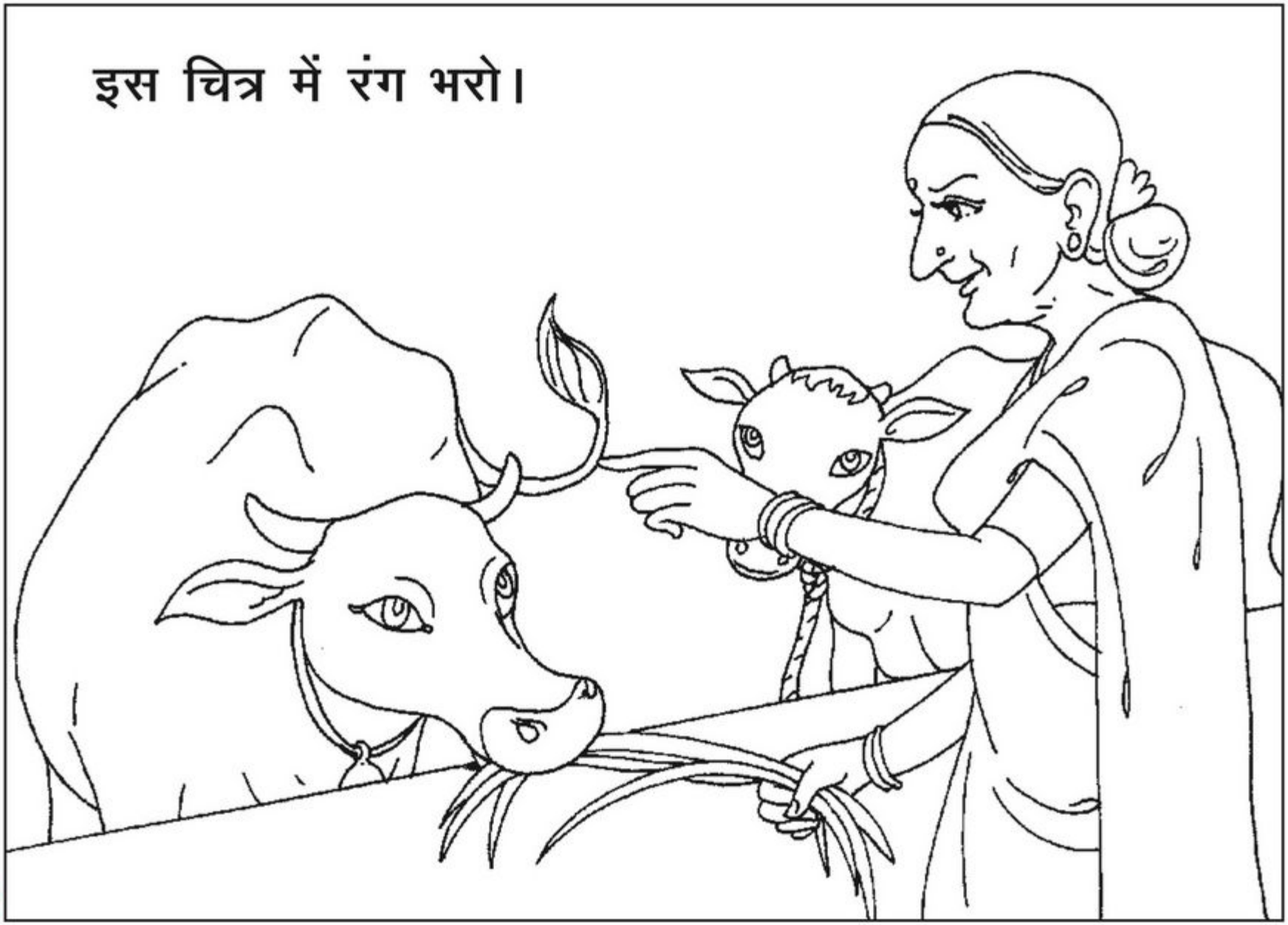

मैं अंकित हूँ। सातवीं कक्षा में पढ़ता हूँ और बड़ा होकर वकील बनना चाहता हूँ क्योंकि न्याय सबके लिये बराबर है। डिस्को डांस और क्रिकेट में कभी पीछे नहीं रहता।
यह किताब खरीदने के लिये शुक्रिया। आपने यह किताब खरीदी तो मेरे पुस्तकालय में और भी बहुत सी किताबें आयेंगी जिन्हें मैं और मेरे दोस्त पढ़ सकेंगे।

जयश्री देशपाण्डे ने कन्नड़ में बहुत सी लघु कथाएँ, निबन्ध, हास्य लेख व उपन्यास लिखे हैं। वे पन्द्रह वर्षों से लिखती आ रही हैं और उनकी कहानियाँ सभी मुख्य कन्नड़ पत्र-पत्रिकाओं में छप चुकी हैं। उन्होंने अमेरिका व यूरोप में यात्रा करी है और उन्हें यात्रा वृत्तान्त लिखना भी अच्छा लगता है। उन्हें यात्रा, फ़ोटोग्राफ़ी व साहित्य में रुचि है।

श्रीकृष्णा केडीलाया चित्रकार हैं जो दस सालों से एक विज्ञापन एजेंसी में काम कर रहे हैं। उन्होंने कन्नड़ की बहुत सी किताबों का रूपांकन व आवरण सज्जा की है।

दूध कहाँ से मिलता है? पैकेट से या गाय से? शहर से आया राजू दादा-दादी से मिलने गाँव गया और उसने दादी को दूध दुहते देखा। ताज़े दूध पर आये फेन को देखकर उसे बहुत अच्छा लगा। उससे ज़्यादा अच्छा उसे क्या लगा होगा...ज़रा सोचो...

इस शृंखला की अन्य पुस्तकें

नौका विहार ● मछली ने समाचार सुने ● गौरैया और अमरूद
कौए के रिश्तेदार ● राजू और तरकारी ● कुहू–कुहू कोयल
कछुआ और खरगोश ● स्वाद अनार का ● रंग बिरंगी सुंदर मछली

अनेक भारतीय भाषाओं में हमारी रोचक किताबों के बारे में और जानकारी के लिये **www.prathambooks.org** पर लॉग आन करें।

हमारी किताबें अंग्रेज़ी, हिंदी, तमिल, तेलुगु, कन्नड़, मराठी, गुजराती, बांग्ला, पंजाबी, उर्दू व उड़िया में भी उपलब्ध हैं।

PRATHAM BOOKS

प्रथम बुक्स भारतीय भाषाओं में वाजिब दामों व अच्छे स्तर की
बाल पुस्तकें प्रकाशित करने वाली ग़ैर मुनाफ़ा प्रकाशन संस्था है।

Age Group: 7-10 years
Bulbulon Wala Phenila Doodh (Hindi)
MRP: Rs. 20.00

ISBN 818263141-6
9 788182 631410